- Str. 85. a. Die Gan'gā fliesst durch Himmel, Erde und Hölle, und führt daher auch den Namen त्रिसातस् « die Dreiströmige ». Die Himmels-Gan'gā (त्र्यामाङ्गा) heisst auch Mandākinī.
- Str. 89. Die Scholien in der C. A. लोकपालानामिन्द्रादीनां जेतार् जयशीलं। — स्वस्यात्मना मुखैः शिरोभिर्चितेश्वरं पूजितशिवं। — तुलित उत्तिप्तः कैलाशो येन। तं।
- Str. 90. a. Das Zucken des rechten Armes ist beim Manne ein glückliches Vorzeichen. Es verkündet die baldige Vereinigung mit der Geliebten. Vgl. zu Çāk. Str. 15. a.
- Str. 93. b. Die Scholien in der C. A. म्रन्तरा मध्यवर्तिनी वेदिव-याकारा (1. वेदिवेधाकारा) भित्तिर्मन्तयोवीर्णायोर्कस्तिनोरिव । पुध्यमान-योर्कस्तिनोर्मध्ये वेदिः क्रियत इति प्रसिद्धं ।
- Str. 94. a. कृतप्रतिकृतप्रीतेस् übersetzt Stenzler: «utriusque impetu et renisu delectatis», die Scholien in der C. A. fassen das Compositum anders auf: कृतस्य प्रतिकृतेन प्रतीकारेण प्रीते: प्रीति-मिद्र: । b. Die C. A. परस्परशर् mit folgender Erklärung: परस्परस्य अन्यार् न्यस्य शराणां वाणानां व्राता: समुद्दा: u. s. w.
- Str. 95. Die Scholien in der C. A. म्रथ रतो रावणः शत्रेव रामाय शत्रीं चतुस्तालपिरमाणां लोक्यष्टिमितपित्तितवान् किंभूतां शत्रिशी । म्रयसो लोक्स्य शङ्क्षिः कीलैम्रितां व्यातां । कामिव । कृतां वैवस्वतस्य यमस्य कूटशाल्मिलं नर्कगतवृत्तविशेषिमव ।
- Str. 96. b. कहलीमुखम्. Stenzler: «aeque facile ac Kadalim arborem». Die C. A. liest कहलीमित्र।
- Str. 97. a. एक erklären die Scholien in der C. A. durch मुख्य। Str. 100. a. Die Scholien in der C. A. बालार्क = उद्यकालि-कसूर्य।